भक्तामर स्तोत्र (आंजनेय छंद)

जैन धर्म की सुखद कहानी।
कितनों के मुख आज जबानी।।
कथा लगी यह बड़ी निराली।
सुने खुले तब किस्मत ताली।।1।।

आचारज थे एक प्रभावक।
पूजे नित उठ सारे श्रावक।।
मानतुंग जी नाम सुपावन।
भक्तामर लागे मनभावन।।2।।

हर्षदेव करते थे शासन।
सबका करते थे वे पालन।।
उन्हें बनारस अपना प्यारा।
लेखन लगता उनको न्यारा।।3।।

एक जैन उनके दरबारी।
करता बातें वह हितकारी।।
एक दिवस बोला राजन से।
निर्णय लेना खुद ही मन से।।4।।

मानतुंग जी ज्ञानी अनुपम।
यहाँ बुलाएँ देखें दमखम।।
नृप ने सच करने की ठानी।
आकर क्षमता यहाँ दिखानी।।5।।

दिया निमंत्रण आप पधारें।
हम सब की तरणी को तारें।।
मानतुंग जी सहज नकारे।
साथ चलें कह सब ही हारे।।6।।

हिम्मत चोरड़िया प्रज्ञा
कोलकाता, लाडनूँ

किए प्रार्थना हाथ जोड़कर।
मिला आपको प्यारा अवसर।।
जिनशासन की शान बढ़ाएँ।
सर्वश्रेष्ठ इसको बतलाएँ।।7।।

बोले इसका नहीं प्रयोजन।
आत्म तत्व है अपना चिंतन।।
चमत्कार हम नहीं दिखाते।
सही राह सबको बतलाते।।8।।

बार-बार जो किया निवेदन।
छलकाया सारा अपनापन।।
साथ चले अब दंभ मिटाना।
सत्य धर्म इनको समझाना।।9।।

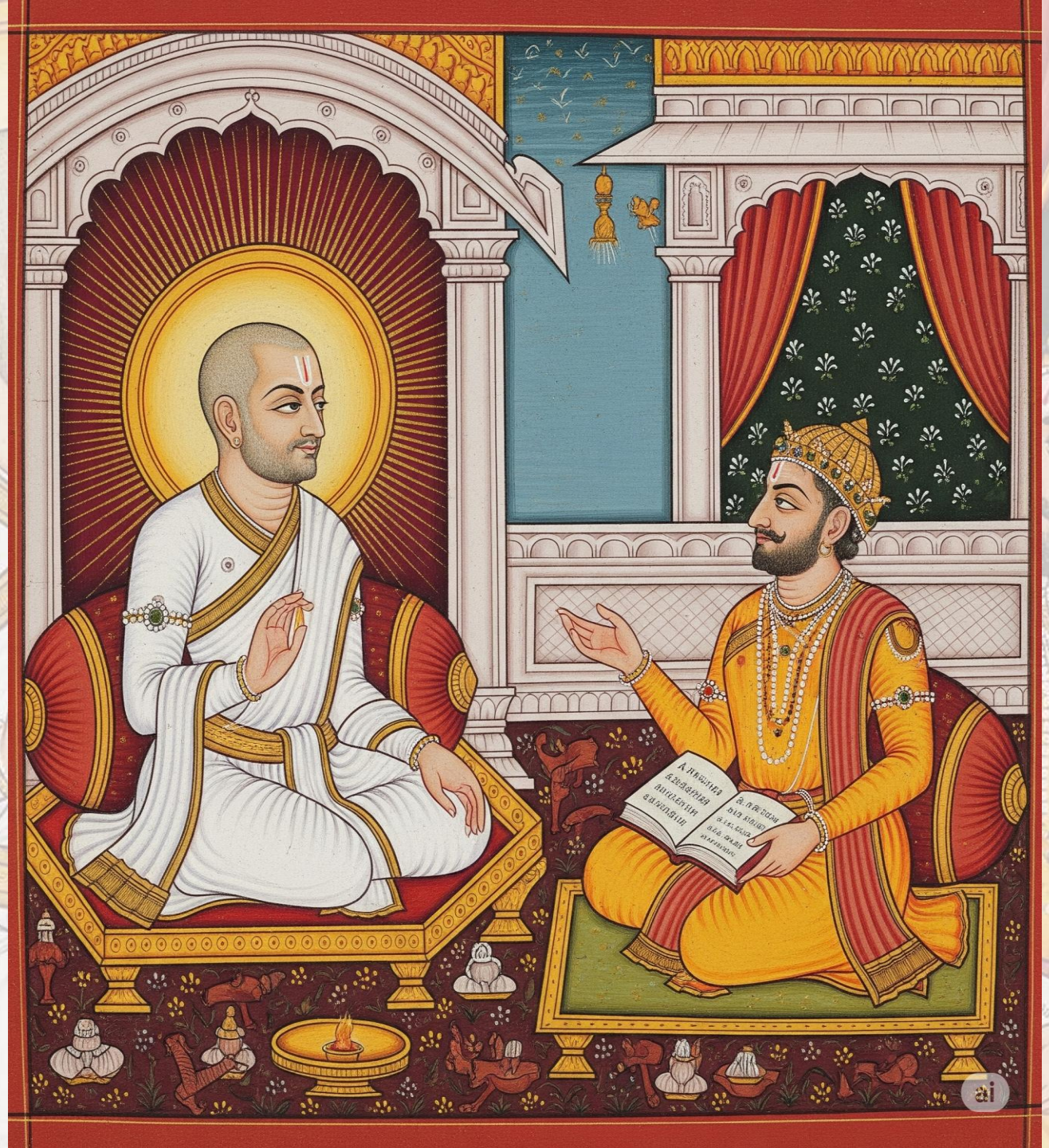

किया प्रणाम सभी ने आकर।
आया दुर्लभ प्यारा अवसर।।
बोले राजा कहिए मुनिवर।
जैन धर्म है कैसे मनहर।।10।।

श्रेष्ठ सदा ब्राह्मण कहलाए।
रवि पूजा कर रोग मिटाए।।
कोढ़ असाध्य हुआ छूमंतर।।
हुई निरोगी काया मनहर।।11।।

मातु चंड़िका निशदिन ध्याया।
बड़ा कमाल एक बतलाया।।
हस्त विछिन्न जोड़ दिखलाया।।
उच्च धर्म अपना बतलाया12।।

हिम्मत चोरड़िया प्रज्ञा
कोलकाता, लाडनूँ

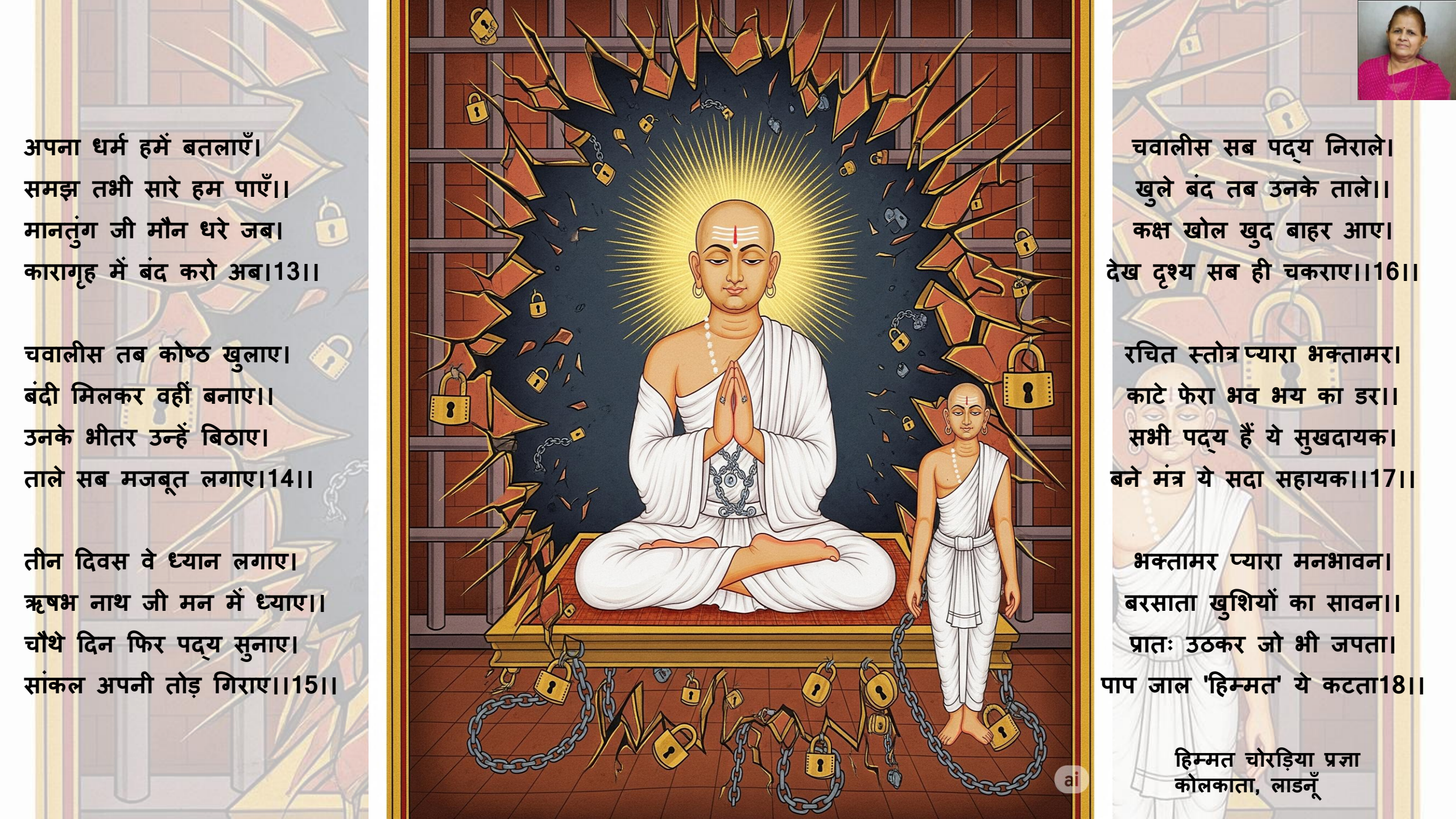

अपना धर्म हमें बतलाएँ।
समझ तभी सारे हम पाएँ।।
मानतुंग जी मौन धरे जब।
कारागृह में बंद करो अब।13।।

चवालीस तब कोष्ठ खुलाए।
बंदी मिलकर वहीं बनाए।।
उनके भीतर उन्हें बिठाए।
ताले सब मजबूत लगाए।14।।

तीन दिवस वे ध्यान लगाए।
ऋषभ नाथ जी मन में ध्याए।।
चौथे दिन फिर पद्य सुनाए।
सांकल अपनी तोड़ गिराए।।15।।

चवालीस सब पद्य निराले।
खुले बंद तब उनके ताले।।
कक्ष खोल खुद बाहर आए।
देख दृश्य सब ही चकराए।।16।।

रचित स्तोत्र प्यारा भक्तामर।
काटे फेरा भव भय का डर।।
सभी पद्य हैं ये सुखदायक।
बने मंत्र ये सदा सहायक।।17।।

भक्तामर प्यारा मनभावन।
बरसाता खुशियों का सावन।।
प्रातः उठकर जो भी जपता।
पाप जाल 'हिम्मत' ये कटता18।।

हिम्मत चोरड़िया प्रज्ञा
कोलकाता, लाडनूँ